Sociology

D - I(H) Paper-II

Critically discuss Durkheim's theory of division of labour.
दुर्खीम के श्रम विभाजन के सिद्धांत का आलोचनात्मक वर्णन करें?

Durkheim 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के फ्रांस के एक प्रमुख समाजशास्त्री थे। अक्सर ऐसा कहा जाता है कि Auguste Comte ने समाजशास्त्र नामक विज्ञान की कल्पना की किंतु इस शास्त्र को विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित कराने का श्रेय Durkheim को ही है। इनके द्वारा प्रस्तुत सिद्धांतो में श्रम विभाजन का सिद्धांत एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है जिसका वर्णन इन्होने अपनी पुस्तक 'De la Division De Travail Social' में किया था। यह पुस्तक तीन खंडो मे 1893 ई॰ में प्रकाशित हुई है। आज यह पुस्तक अंग्रेजी में 'The Division of labour is society' नाम से प्रकाशित है। इस पुस्तक के प्रथम खंड में श्रम विभाजन के असामान्य स्वरूपों का वर्णन मिलता है।

Durkheim श्रम विभाजन के कारणों एवं दशाओं का वर्णन करने वाले सर्वप्रथम विचारक नही है। इनसे भी पहले उपयोगितावादी विचारकों ने श्रम विभाजन के कारणो से सम्बन्धित एक सिद्धांत प्रस्तुत किया था जो सुखवादी सिद्धांत (Happiness Theory) के नाम से जाना जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार सुख प्राप्त करने की अनंत इच्छा ही श्रम विभाजन का मुख्य कारण है अर्थात् इस सिद्धांत के समर्थकों के अनुसार सुख प्राप्त करने की इच्छा कारण है और श्रम विभाजन इसका परिणाम है। Durkheim समाजशास्त्री सम्प्रदाय के एक प्रतिनिधी है और इनके अनुसार सामाजिक तथ्य ही परिवर्तन का कारण है। इनके अनुसार सामाजिक तथ्य अन्य किसी सामाजिक तथ्य द्वारा ही प्रभावित हो सकता है। अतः श्रम विभाजन के कारणों को सामाजिक परिवेश में ढूढना चाहिए। इन्होने कुछ तर्कों के आधार पर सुखवाद सिद्धांत के समर्थकों के विचारों का खंडन किया और बताया कि सुख प्राप्ति की इच्छा श्रम विभाजन का कारण नही है इसी तरह उन्होने अर्थशक्ति के इस विचार को मानने से इन्कार किया कि अधिक उत्पादन श्रम विभाजन का कारण है। इन्होने तर्क दिया है कि यदि सुख प्राप्ति की इच्छा का श्रम विभाजन का कारण माना गया तो इसका मतलब होगा कि कम श्रम विभाजन वाले समाजों या समुदायों की तुलना में अधिक श्रम विभाजन वाले समाज के लोगो का जीवन अधिक सुखमय होगा। अर्थात् आदिम समाजों की तुलना मे सभ्य समाजो के लोगों की तुलना में नगरीय समाज के लोगों अधिक सुखी होंगे या ग्रामीण समाजों के लोगों की तुलना में नगरीय समाज के लोग अधिक सुखी होंगे। किंतु Durkheim के अनुसार वास्तविक तथ्य इस बात की पुष्टि नही करने की ग्रामीण समाज के लोगों की तुलना में नगरीय समाज के लोगो का जीवन अधिक सुखमय है। इन्होने यह विचार दिया है कि नगरो में निश्चित रूप से लोगों के पास भौतिक वस्तुओं की भरमार रहती है किंतु सुख अधिक से अधिक भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति में निहित नही है बल्कि सामाजिक स्वास्थ्य में निहित है। E.B. Simulyan ने भी Durkheim

के इस विचार को स्पष्ट करते हुए अपने लेख 'The Sociologism of Emile-Durkheim & His School' में लिखा है "सुख सामाजिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित है जो कि उन सभी प्रकार की अधिकता से नष्ट हो जाता है जिनमें भौतिक ऐश्वर्य की अधिकता भी सम्मिलित है।" (Happiness is connected with Social Health which is imperilled by excess of every sort including a super abundance of material luxuries) आत्महत्या की बढ़ती हुई दर के आधार पर Durkheim ने बताया है कि शहरों में आत्महत्या की दर अधिक होना दुखी जीवन का द्योतक है। शहरों में श्रम विभाजन अधिक पाया जाता है। यदि सुख प्राप्ति की इच्छा और श्रम विभाजन के बीच सकारात्मक सह सम्बन्ध रहता तो श्रम विभाजन के साथ-साथ सामाजिक स्वास्थ्य में भी वृद्धि होती है अर्थात् आत्महत्या की दर कम होती, किंतु स्थिति इसके विपरीत है। इन्होंने आदिम और ग्रामीण समुदायों का भी उल्लेख किया है जहाँ श्रम विभाजन कम है और साथ ही आत्महत्या की दर भी तुलनात्मक रूप से कम है। इसका मतलब कि शहरों की अपेक्षा कम श्रम विभाजन वाले ग्रामीण एवं आदिम समाजों में आत्महत्या की दर कम पाया जाना उनके स्वस्थ एवं सुखी जीवन का परिचालक है। इस तरह दुर्खीम ने यह सिद्ध किया कि सुखवादी सिद्धांत श्रम विभाजन के वास्तविक कारणों पर प्रकाश डालने में असमर्थ है।

Durkheim ने अपने पूर्ववर्ती विचारकों के श्रम विभाजन से सम्बन्धित विचारों का खंडन कर श्रम विभाजन के वास्तविक कारण को स्पष्ट किया। इन्होंने श्रम विभाजन के कारणों को स्पष्ट किया। इन्होंने श्रम विभाजन के कारणों को प्राथमिक कारण एवं द्वैतियक कारण इन दो भागों में विभाजित किया। इनके अनुसार श्रम विभाजन के तीन प्रधान कारक हैं जो निम्नलिखित हैं :-

(1) भौतिक घनत्व (material density)
(2) गतिशीलता या नैतिक घनत्व (Dynamic or modal density)
(3) सामाजिक आयतन (Spial volume)

Durkheim का भौतिक घनत्व का तात्पर्य जनसंख्या के घनत्व से है। इनके अनुसार जैसे-जैसे संख्या के आकार एवं घनत्व में वृद्धि होती है वैसे-वैसे श्रम विभाजन में वृद्धि होती है। इनके ही शब्दों में "श्रम विभाजन समाजों के आयतन और घनत्व के साथ प्रत्यक्ष अनुपात में परिवर्तित होता है।" (The division of labour varies in direct ratio with the volume & density of Societies ....) इसका मतलब कि समाज के आकार एवं घनत्व में कमी होने के कारण श्रम विभाजन में कमी होती है एवं समाज के आकार एवं घनत्व में वृद्धि के कारण श्रम विभाजन में वृद्धि होती है। Durkheim के अनुसार नैतिक घनत्व का तात्पर्य अन्तः क्रिया की गहनता से है। Durkheim ने इसका भी उल्लेख किया है कि भौतिक घनत्व और नैतिक घनत्व एक-दूसरे

के साथ घनिष्ठ रूप में सम्बन्धित है क्योंकी जब तक व्यक्तियों में भौतिकघनत्व की वृद्धि नही होगी तब तक उनकी अन्तः क्रिया मे भी वृद्धि नही होगी। Durkheim का सामाजिक आयतन से तात्पर्य जनसंख्या के आकार से है। भौतिक घनत्व के कारण लोगो की अन्तः क्रिया के घनत्व में वृद्धि होगी। इस तरह जनसंख्या की वृद्धि के कारण भी मानव अन्तःक्रियाओं या उसके सामाजिक सम्बन्धों में वृद्धि होगी अर्थात श्रम विभाजन की उत्पत्ति में जितना प्रभाव ~~जनसंख्या~~ जनसंख्या के घनत्व का है उतना ही प्रभाव उसके आकार में वृद्धि का भी है। Durkheim ने यह भी स्पष्ट किया है कि समाज का आकार बढ़ जाने से श्रमविभाजन उत्पन्न होने का मतलब यह नही कि समाज के विभिन्न भागों पर बाहरी दशाओं का विभिन्न तरह प्रभाव पड़ता है। जैसा कि Spencer ने सिद्ध करने का प्रयास किया है इसके विपरीत Durkheim ने समाज के आकार एवं अन्तः क्रिया में वृद्धि के कारण श्रम विभाजन इसलिए होता है कि इससे समाज में अस्तित्व के लिए संघर्ष की प्रक्रिया अधिक तीव्र हो जाती है। दुसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि यदि किसी समाज में सदस्यों की संख्या और उनके बीच पाए जाने वाले सम्बन्धों के घनत्व में वृद्धि होती है तो उस समाज में अस्तित्व के लिए संघर्ष अधिक तीव्र हो जाता है। फलस्वरूप विशेषीकरण तीव्र और पूर्ण होने लगता है। Durkheim का यह विचार Darwin के विचार से भी समान रखता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि विशेषीकरण का कारण अस्तित्व के लिए संघर्ष के आकार तथा जनसंख्या के घनत्व और नैतिक घनत्व में वृद्धि का परिणाम है। Durkheim ने श्रम विभाजन की स्थिति उत्पन्न करने मे भौगोलिक दशाओं के महत्व को स्वीकार किया है। किंतु स्पेंसर (Spencer) की तरह उन्होने भौगोलिक दशाओं को श्रम विभाजन का निर्णायक कारक नही माना है। जिस प्रकार भूमि का ढाल किसी सरिता को उत्पन्न नही करता, केवल उसकी दिशा और गति ही निश्चित करता है। उसी प्रकार भौगोलिक शक्तियाँ श्रम विभाजन की दिशा या प्रकृति (Trend) निश्चित करती है उसे उत्पन्न नही करती। एक ही भौगोलिक क्षेत्र में व्यक्ति विभिन्न कार्यों में अपने को विशेषीकृत करते हैं। ये तत्व Durkheim के अनुसार भौगोलिक निर्णायकत्व का खोखलापन सिद्ध कर देते हैं।

Durkheim के अनुसार सर्वप्रथम श्रम विभाजन Sex पर आधारित था अर्थात विभिन्न Sex के लोगों को भिन्न-भिन्न कार्य सौंपा गया। उसके बाद श्रम विभाजन उम्र पर आधारित हुआ और विभिन्न उम्र समूहों के लोगो के विभिन्न तरह के कार्य सौंपे गए।

Durkheim ने श्रम विभाजन के प्रभावों का भी उल्लेख किया है। इनके अनुसार विभिन्न संस्थाएँ श्रम विभाजन के नाकारात्मक प्रकार्य हैं और सभी तरह के विकास इसके नाकारात्मक प्रकार्य हैं। इनके अनुसार श्रम विभाजन के कारण विभिन्न व्यक्ति विभिन्न तरह के कार्य करने लगे। एक विशिष्ठ तरह के कार्य करने वाले व्यक्ति एक

A

समूह में सम्मिलित किए गए और दूसरे तरह के कार्य करने वाले व्यक्ति दूसरे समूह सम्मिलित किए गए। इस तरह समाज में विभिन्न स्वार्थ समूहों (Interest groups) का जन्म हुआ। श्रम विभाजन के कारण एक व्यक्ति सदा एक ही तरह का कार्य करने लगा। फलस्वरूप उसे उस कार्य को सम्पन्न करने में निपुणता प्राप्त हुई। श्रम विभाजन के कारण समाज में प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित हुई और नए-नए तरह के अविष्कार होने लगे और समाज प्रगति के पथ पर अग्रसित होने लगा। श्रम विभाजन के कारण व्यक्तिवाद एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता में वृद्धि हुई। Durkheim के ही शब्दों में "व्यक्तिवाद श्रम विभाजन के द्वारा व्यक्तियों पर जबर्दस्ती सौंपा गया नैतिक कर्तव्य था।" (Individualism was division a moral duty freed upon the individual through the division of labour) विशेषीकरण के कारण व्यक्तिगत भिन्नताएँ बढ़ती है और लोगों के स्वार्थ और दृष्टिकोण भी भिन्न-भिन्न होने लगते हैं। फलस्वरूप व्यक्तिगत स्वतंत्रता का महत्व बढ़ जाता है और व्यक्तिवाद का विकास होता है।

Durkheim ने श्रम विभाजन के प्रभावों का वर्णन करते हुए यह भी बताया है कि श्रम विभाजन समाज की यांत्रिक एकता की प्रकृति सावयवी एकता में बदल गई। यांत्रिक एकता की स्थिति में धर्म, प्रथा, परम्परा इत्यादी द्वारा व्यक्तियों के व्यवहारों का नियंत्रण होता है। व्यक्तिगत चेतना विकसित नहीं रहती है। व्यक्ति सामूहिक चेतना द्वारा नियंत्रित एवं निर्देशित होता है तथा समाज में दमनकारी कानून (Repressive Law) का बोलबाला होता है। Durkheim के अनुसार श्रम विभाजन के कारण समाज एक सावयव की भांति कार्य करने लगा और समाज के अंगों में इसीतरह की अन्तः निर्भरता उपलब्ध हुई जिस तरह की अन्तः निर्भरता एक सावयव के अंगों में पाई जाती है। साथ ही व्यक्तियों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता की वृद्धि के साथ-साथ सामाजिक एकता में भी वृद्धि हुई। दुर्खीम ने यह भी स्पष्ट किया है कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक एकता एक दूसरे के विरोधी नहीं है बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। अर्थात् सामाजिक एकता भी बढ़ती है। जिस तरह सावयव (Organism) के अंगों का सावयव से पृथक होकर कोई अस्तित्व नहीं रहता उसी तरह श्रम विभाजन के कारण ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई कि समाज से अलग व्यक्ति का कोई अस्तित्व ही नहीं रहा। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समाज के प्रत्येक अंग का दुसरे पर आश्रित रहना अवश्यभावी हो गया। इस तरह श्रम विभाजन के कारण सावयवी एकता की स्थिति उत्पन्न हुई।

Durkheim के अनुसार श्रम विभाजन के कारण कानून की संरचना में भी परिवर्तन हुआ। उन्होंने बताया है कि जब श्रम विभाजन कम था उस समय दमनकारी कानून (Repressive Law) प्रचलित था। इस तरह के कानून का उद्देश्य अपराधी का दमन करना अर्थात् वैयक्तिक चेतना को दबाकर उस पर सामूहिक चेतना को थोपना

Scanned with CamScanner

था। श्रम विभाजन के कारण प्रतिकारी कानून (Restitution law) का विस्तार हुआ। इस तरह व्यक्तियों के व्यवहारों का (Civil law) द्वारा होने लगा। समाज की प्रकृति यांत्रिक से सावयवी में परिवर्तित करने एवं दमनकारी कानूनों की जगह प्रतिकारी कानूनों को विकसित करने में श्रम विभाजन के महत्व की चर्चा करते हुए Durkheim ने लिखा है "प्रतिकारी स्वीकृतियों से युक्त सहकारी कानून से जो सम्बन्ध नियंत्रित होते हैं और जिस एकता को वे अभिव्यक्त करते हैं, सामाजिक श्रम विभाजन से उत्पन्न होते हैं।" (The relations governed by co-~~operation~~ operative law with restitutive sanctions & the solidarity which they express result from the division of Social labour)

Durkheim के अनुसार नये-नये अधिकारों के साथ-साथ औद्योगिक विकास हुआ और औद्योगिकरण की स्थिति उत्पन्न हुई। औद्योगिकरण के साथ-साथ नगरीकरण की प्रक्रिया में भी वृद्धि हुई। ग्रामीण समाज नगरी समाज में बदलने लगा तथा लोगों के रहन-सहन के स्तर एवं मनोवृत्ति में परिवर्तन हुआ। इस तरह दुरखीम के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन हुआ और उद्विकास की स्थिति उत्पन्न हुई। इनके अनुसार समाज में जो भी अच्छे या बुरे परिवर्तन हुआ है वे सभी श्रम विभाजन के आधार पर सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक विकास का वर्णन किया है इसलिए इनके श्रम विभाजन के सिद्धांत को सामाजिक परिवर्तन का भी सिद्धांत कहा जाता है।

Criticism (आलोचना)

यदि Durkheim ने अपने पूर्ववर्ती विचारकों के विचारों का खंडन कर एक ऐसा सिद्धांत प्रस्तुत करने का प्रयास किया जो श्रम विभाजन के कारण एवं प्रभाव पर प्रकाश डाल सके। किंतु इनका यह सिद्धांत भी कुछ रूपों में दोषपूर्ण प्रतीत होता है जो निम्नांकित हैं:-

(1) Durkheim का श्रम विभाजन को सामाजिक परिवर्तन का कारण या आधार बताने का विचार उचित नहीं प्रतीत होता है। इन्होंने स्वयं बताया है कि श्रम-विभाजन का कारण जनसंख्या के आकार और घनत्व में वृद्धि है। अतः उन्हीं के वर्णन के आधार पर सिद्ध होता है कि सामाजिक परिवर्तन का कारण श्रम विभाजन नहीं है बल्कि जनसंख्या के आकार और घनत्व में वृद्धि है।

(2) Durkheim का जनसंख्या के आकार और घनत्व में वृद्धि को श्रम विभाजन का निर्णायक कारक बताने का विचार भी उचित नहीं प्रतीत होता है। श्रम विभाजन किसी एक कारक का परिणाम नहीं है बल्कि बहुत से कारक श्रम विभाजन की स्थिति उत्पन्न करने में योगदान देते हैं। Ginsberg ने भी दुरखीम के इस विचार का खंडन किया है और बताया है कि इन्होंने श्रम विभाजन को एकमात्र कारक जनसंख्या को बताने की भूल की है। साथ ही Sorokin ने भी इस विचार

Scanned with CamScanner

Vilfredo Pareto तथा Max Weber के अनुसार विभि-
का खंडन किया है। Vilfredo Pareto तथा Max Weber के अनुसार विभि-
न्न सामाजिक घटनाएँ एक-दुसरे को प्रभावित करती है। अतः Durkheim
का किसी एक कारक को श्रम विभाजन का निर्णायक कारक बताने का विचार उ-
चित नही प्रतीत होता है। Spencer के अनुसार श्रम विभाजन का निर्णायक का-
रक जनसंख्या का आकार और घनत्व में वृद्धि नही है। ये कारक श्रम विभाजन
की सहायक दशाएँ मात्र है। इन्होने भौगोलिक दशाओं को श्रम विभाजन का नि-
र्णायक कारक बताया है। ऐसी परिस्थिति में Durkheim के विचार को सही
मानने तथा Spencer एवं अन्य विचारकों के विचारों को अस्वीकार करने का
कार्य कठिन प्रतीत होता है। Bogardus ने भी Durkheim के विचारों का खंडन
करते हुए बताया है कि " At times density of population operates as
Durkheim contended but not always.

(3) Durkheim ने श्रम विभाजन का निर्णायक कारक जनसंख्या के आकार एवं उ-
सके घनत्व में वृद्धि बताकर अपने इस सिद्धांत का उल्लंघन किया कि सामा-
जिक घटना के कारकों को सामाजिक परिवेश में ही ढूंढना चाहिए। जनसंख्या एवं
जैवकीय तथ्य है अतः Durkheim के श्रम विभाजन से सम्बन्धित वर्णन को एक
समाजशास्त्रीय व्याख्या नही मानना चाहिए। इस सम्बन्ध में दुर्खीम के विचारों का
खंडन करते हुए E. B. Smullyan ने भी लिखा है "This is obviously a biologi-
cal rather than a Sociological type of explanation। (स्पष्ट रूप से यह समा-
जशास्त्रीय व्याख्या होने की अपेक्षा एक जीवशास्त्रीय व्याख्या है।)

(4) Durkheim का यह विचार कि समाज में कोई भी परिवर्तन श्रम विभाजन के
ही कारण होता है, उचित नही प्रतीत होता है। Ginsberg ने बताया है कि
सामाजिक परिवर्तन विभिन्न कारकों का परिणाम है।

(5) सैद्धांतिक तौर पर Durkheim ने समाज की एक रेखीय उद्विकासिय व्याख्या
का विरोध किया है। किंतु स्वयं श्रम विभाजन के सिद्धांत में एक रेखीय उद-
विकासीय प्रस्तुत किया। R.K. Merton ने भी इनके एक रेखीय उदविकासीए
व्याख्या (Unilineal evolutionary explanation) की आलोचना की है।

(6) Durkheim का व्यक्ति के महत्व को अस्वीकार करने और उसके ऊपर स-
माज की महत्ता बताने का विचार उचित नही प्रतीत होता है। MacIver के अनु-
सार व्यक्ति और समाज समान रूप से महत्वपूर्ण है और एक की अनुपस्थिति
में दुसरे का कोई अस्तित्व ही नही है।

S. N. Chaudhary
L.N.M.U

Scanned with CamScanner